अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 12 जुलाई, 2015)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

1. निम्नांकित में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखए - 10x1 = (10)

(a) अंग साहित्य में सर्वप्रथम स्थान है -

(क) उत्तराध्ययन (ख) दशवैकालिक

(ग) आचारांग (घ) नन्दी सूत्र ( )

(b) अनुयोग का सार है -

(क) आचार (ख) सम्यक् चारित्र

(ग) प्ररूपणा (घ) देशना ( )

(c) आचारांग निविड़ बंध को आचालित (चलित) करता है, अतः कहलाता है -

(क) आगार (ख) आचाल

(ग) आभार (घ) आसास ( )

(d) राजा प्रदेशी के सारथी का नाम था -

(क) सूर्यकान्त (ख) जितशत्रु

(ग) संभूति (घ) चित्त ( )

(e) संवर के विस्तार से भेद हैं-

(क) 7 (ख) 14

(ग) 42 (घ) 69 ( )

(f) विवेकपूर्वक सत्प्रवृत्ति को कहते हैं -

(क) संवर (ख) क्रिया

(ग) ध्यान (घ) समिति ( )

(g) जिन भगवान में परीषह संभव है -

(क) 11 (ख) 22

(ग) 19 (घ) 1 ( )

(h) दूसरे देवलोक में दूसरे गुणस्थान में बंध योग्य प्रकृतियाँ हैं -

(क) 103 (ख) 96

(ग) 91 (घ) 92 ( )

(i) मनुष्य लब्धि पर्याप्तक के 5वें गुणस्थान में बंध योग्य प्रकृतियाँ हैं -

(क) 67 (ख) 63

(ग) 62 (घ) 77 ( )

(j) पुहवी + ईस = पुहवीस में संधि है -

(क) दीर्घ सन्धि (ख) असमान स्वर संधि

(ग) अव्यय संधि (घ) लोप संधि ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ/नहीं में दीजिए - **10x1=(10)**

(a) आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम नव ब्रह्मचर्य है: - ( )

(b) चौथी "विमुक्ति"नामक चूलिका में वीतराग स्वरूप का उपमाओं के साथ वर्णन किया गया है। ( )

(c) धन-वैभव में मनुष्य सबसे अधिक आसक्त होता है - ( )

(d) राजा प्रदेशी को जीव और शरीर की अभिन्नता संबंधी तत्त्व बोध प्राप्त हुआ। ( )

(e) कषायरहित जीव कर्मयोग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है। ( )

(f) घृणा उत्पादक कर्म अरति मोहनीय है। ( )

(g) शुभ नाम कर्म के उदय से नाभि से नीचे के अवयव श्रेष्ठ होते हैं। ( )

(h) तेजो लेशी के समुच्चय बंध में सूक्ष्मनाम का बंध नहीं होता है। ( )

(i) उपशम समकित में आयुष्य का बंध नहीं होता है। ( )

(j) अधिकरण कारक में षष्ठी विभक्ति होती है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मेरा सार अनुयोग है। .....

(b) मैं किसी वस्तु पर लगे मैल को दूर करके उसे स्वच्छ बना देता हूँ। .....

(c) मैं वास्तविक स्व-अस्तित्त्व का विस्मरण हूँ। .....

(d) मेरी दादी श्वेताम्बिका नगरी में धर्मपरायण श्राविका थीं। .....

(e) मैं आचारांग सूत्र की तीसरी चूलिका हूँ। . .....

(f) मुझसे आत्मतुला की धारणा सम्पुष्ट होती है। .....

(g) मैं मोहनीय कर्म की जघन्य स्थिति का अधिकारी हूँ। .....

(h) मैं पात्र को ज्ञानादि सद्गुण प्रदान करता हूँ। .....

(i) मेरा बंध 7वें तथा 8वें गुणस्थान में ही होता है। .....

(j) मुझमें गुणस्थान 4 से 14 तथा समुच्चय बंध 79 का है। .....

4 निम्नलिखित जोड़ियाँ क्रम से नहीं दी हैं।जोड़ी मिलान कर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए - **10x1=(10)**

(a)	आश्वास	-	आवंति	.....
(b)	लोकसार	-	पुत्र	.....
(c)	अनुदिशा	-	आदर्श	.....
(d)	भाव दिशा	-	मम	.....
(e)	कमला	-	स्नातक	.....
(f)	सुणु	-	वितर्क	.....
(g)	एकवचन	-	तेसुं	.....
(h)	बहुवचन	-	वायव्य	.....
(i)	बकुश	-	लक्ष्मी	.....
(j)	श्रुत	-	तेउकाय	

5. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए - (कोई बारह) 12x2=24

(a) आत्मा को जानने का कोई एक साधन लिखिए।

.....

.....

.....

(b) 'अरतिं आउट्टे से मेधावी खणंसि मुक्के।' सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(c) निष्कर्मदर्शी का कोई एक अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(d) आठ प्रत्येक प्रकृतियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(e) आकिंचन्य को समझाइए।

.....

.....

.....

(f) ज्ञानावरणीय कर्म के निमित्त से कौनसे परीषह होते हैं?

.....

.....

.....

(g) 'विपरीतमनोज्ञानाम्' का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(h) सम्पूर्ण कर्मों एवं तदाश्रित भावों के नाश से होने वाले तीन कार्य लिखिए।

.....

.....

.....

(i) 'नामगोत्रयोर्विंशतिः' सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(j) औदारिक मिश्र काय योग में समुच्चय बंध में कम होने वाली 6 प्रकृतियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

(k) पृथ्वीकाय में बंध स्वामित्त्व लिखिए।

.....

.....

.....

(l) तीसरी नरक के दूसरे गुणस्थान में छूटने वाली 4 प्रकृतियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

(m) अवधिज्ञान में बंध स्वामित्त्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6. निम्न प्रश्नों के उत्तर 3-4 पंक्तियों में लिखिए - (कोई बारह) 12x3 (36)

(a) साधक के चार प्रकार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) 'पुरिसा!तुममेव तुमं मित्तं,किं बहिया मित्तमिच्छसि ? का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) परिघेतव्वा, परितावेयव्वा, उद्दवेयव्वा शब्दों के अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) 'णा ऽणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) सत्य के तीन अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) दुःख-उत्पत्ति के प्रमुख कारण क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(g) सिद्धों के आत्म-प्रदेशों की अवगाहना कितनी होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

(h) औदारिक मिश्र काय योग का बंध स्वामित्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) कार्मण काय योग का बंध स्वामित्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(j) देवलोक में उत्पन्न हुए देव, मनुष्य लोक में आने के आकांक्षी होते हुए भी क्यों नहीं आ पाते हैं? कोई तीन कारण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(k) छद्मस्थ जीव किन दस वस्तुओं को नहीं देख सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(l) लोप विधान संधि के प्रथम नियम को समझाते हुए तीन उदाहरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(m) धेणूअ सत्ती हवइ। सामिस्स पुत्तो जग्गइ। इन वाक्यों का हिन्दी अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....